17 जून 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 6 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (द्वितीय), 2018 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित -

52वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द संपन्न

● देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 1500 से अधिक आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में लाभान्वित ●प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 16 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित ● शिविर में लगभग 65 विद्वानों द्वारा धर्मप्रभावना।

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ रविवार, दिनांक 20 मई से बुधवार, दिनांक 6 जून तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा आयोजित 18 दिवसीय 52वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

श्री समयसार मंडल विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती कुसुम गंगवाल-पुत्रवधु सुनीता एवं रीना गंगवाल जयपुर, श्री प्रवचनसार मंडल विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती सुलोचनाजी सिंघवी धर्मपत्नी श्री मनोहरलालजी सिंघवी (मुलतानवाले) जयपुर एवं श्री नियमसार मंडल विधान के आमंत्रणकर्ता श्री घनश्यामप्रसाद, सुखानन्द, माधवप्रसादजी शास्त्री व समस्त शाह परिवार शाहगढ थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित प्रियंकजी शास्त्री खुरई, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री रहली द्वारा संपन्न हुये।

प्रात:कालीन प्रवचन - प्रतिदिन **आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी** के इष्टोपदेश पर सी.डी.प्रवचन के अतिरिक्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा समयसार-प्रवचनसार-नियमसार विधानों की जयमाला पर हुआ, इसके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर के भी प्रवचनों का लाभ मिला।

रात्रिकालीन प्रवचन - ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रवचनसार की चरणानुयोगसूचक चूलिका पर प्रतिदिन हुये प्रवचनों के पूर्व डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ आदि विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रवचनों के अतिरिक्त

(शेष पृष्ठ 6 पर ...)

53वाँ प्रशिक्षण शिविर जयपुर में

श्री संजयजी दीवान होंगे मुख्य आयोजनकर्ता

श्री महेन्द्रकुमारजी-कुसुमजी गंगवाल की अगुवाई में जयपुर के प्रतिनिधि मंडल ने समारोहपूर्वक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के करकमलों से ध्वज ग्रहण किया

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : विगत 50 वर्षों से पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित अनुपम ''श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों'' की शृंखला में 53वाँ प्रशिक्षण शिविर आगामी 19 मई से 5 जून 2019 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में आयोजित होगा।

उक्त शिविर के मुख्य आयोजनकर्ता श्री संजयजी दीवान परिवार, सूरत होंगे।

यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 3 जून को आयोजित एक भव्य समारोह में श्री संजय दीवान परिवार की ओर से श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल एवं श्रीमती कुसुमजी गंगवाल की अगुवाई में जयपुर के प्रतिनिधि मंडल ने समारोहपूर्वक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के करकमलों से धर्मध्वज ग्रहण किया। इससे पूर्व अध्यक्ष मा.चन्द्रभानजी जैन के नेतृत्व में तीर्थधाम सिद्धायतन के ट्रस्टीगणों ने गाजेबाजे के साथ लाकर उक्त ध्वज डॉ. भारिल्ल को सौंपा।

(शेष पृष्ठ 7 पर ...)

सम्पादकीय -

ऐसे क्या पाप किये ?

11

- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

सत्यधर्म की पूजा में सत्यधर्म का ही प्रतिपादन होना चाहिए था; किन्तु सत्यवचन की प्रेरणा देते हुए वहाँ कहा गया है कि -

''कठिन-वचन मत बोल, परनिन्दा अर झूठ-तेज,
साँच जबाहर खोल, सतवादी जग में सुखी।

पूरे पद्य में शुभभाव रूप व्रत पालन करने का वर्णन हैं। जैसे -

''उत्तम सत्यविरत पालीजे, पर विश्वास घात नहि कीजे,
साँचे-झूठे मानुष देखे, आपन पूत स्व-पास न पेखे ।।''

इसीप्रकार त्यागधर्म के प्रकरण में दान के भेद गिनाते हुए सम्पूर्ण छन्द में दान करने की प्रेरणा दी गई है।

संयमधर्म तथा तपधर्म के प्रकरण में भी संयम एवं तप के जो १२-१२ भेद गिनाये उनमें भी पुण्य कार्य करने की बात ही कही गई है।

पुण्य की या शुभ की चर्चा करना या प्रेरणा देना गलत नहीं है, देना ही चाहिए; परन्तु साथ में धर्म की व्याख्या स्पष्ट करते हुए दोनों में अन्तर भी स्पष्ट करते जाना चाहिए ताकि दोनों में मिलावट नहीं हो, भले ही पुण्य धर्म नहीं है; परन्तु भूमिकानुसार पुण्य कार्य भी होंगे ही। भजन, स्तुति, पूजा-पाठ लिखते समय कविगण स्थूल कथन ही कर देते हैं, और भक्ति भावनावश उपचार कथन में ऐसा चल जाता है; अतः इसे इसी अभिप्राय से लेना चाहिए। तथा पाप से बचने के लिए और परमात्मा बनने के लिए देव-शास्त्र-गुरु की शरण में तो आना ही होता है जो कि शुभभाव ही है।

यहाँ ज्ञातव्य यह है कि आत्मा में स्वभाव और विभाव रूप से दो प्रकार की परिणति होती है। स्वभाव परिणति तो वीतराग भाव रूप है और विभाव परिणति राग-द्वेष रूप है। इन राग व द्वेष में द्वेष तो सर्वथा पापरूप ही है, परन्तु राग प्रशस्त और अप्रशस्त के भेद से दो प्रकार का है। प्रशस्त राग पुण्य हैं और अप्रशस्त राग पाप हैं। सम्यग्दर्शन उत्पन्न होने के पहले स्वभाव भाव का उदय ही नहीं होता, अतः मिथ्यात्व की दशा में जीव की शुभ या अशुभ रूप विभाव परिणति ही होती है तथा सम्यग्दर्शन होने के बाद कर्म का सर्वथा अभाव होने तक स्वभाव एवं विभाव दोनों परिणतियाँ रहती हैं। उनमें स्वभाव परिणति संवर-निर्जरा और मोक्ष की जननी है और विभाव परिणति संसार के कारणभूत कर्म बंध करती है।

कहा भी है - **''जावत शुद्धोपयोग पावत ना ही मनोग।**
तावत ही ग्रहण जोग कही पुन्न करनी ।।

जबतक शुद्धोपयोग रूप वीतराग दशा नहीं हो जाती, तबतक मुक्ति के मार्ग पुण्यकार्य करने योग्य हैं - ऐसा आचार्य कहते हैं परन्तु ज्ञानी पुण्य और धर्म के अन्तर को स्पष्ट जानते हैं, उनमें मिलावट नहीं करते।

आध्यात्मिक पंच सकार : सुखी होने का सूत्र

जैसे पेट दर्द से पीड़ित व्यक्ति को चतुर वैद्य सर्वप्रथम उसके पेट शोधन के लिए सोंफ, सोंठ, सनाय, सेंधा और सौंचा (काला) नमक - इन पाँच वस्तुओं से बना 'पंच सकार' चूर्ण देता है – उसीप्रकार भवताप से पीड़ित प्राणियों का दुःख-दर्द मिटाने के लिए भी आत्म-विकार शोधक एक नुस्खा है, जिसका नाम है आध्यात्मिक पंच सकार।

आत्म-शोधन करनेवाले 'आध्यात्मिक पंच सकार' चूर्ण के प्रत्येक पद का प्रथम अक्षर भी 'स' से शुरू होता है और संख्या में भी पाँच हैं। अतः इसका भी पंच सकार नाम सार्थक है – नुस्खा निम्नप्रकार है –

(१) संयोग (२) संयोगी भाव (३) स्वभाव (४) स्वभाव के साधन और (५) सिद्धत्व। इस पंच सकार के गुणधर्म एवं उपयोग करने का सही विधि-विधान जानना जरूरी है। अन्यथा इसके गलत उपयोग से भवरोग के साथ निरन्तर भावमरण होते रहने की संभावना बढ़ सकती है।

उपर्युक्त संयोगादि पंच सकारों में निम्नांकित सुखदायक-दुःखदायक आदि पाँच बोल घटित करने से पाँच भवतापहारी महासिद्धान्त फलित होते हैं। वे पाँच बोल निम्न प्रकार हैं-

(१) सुखदायक एवं दुखदायक (२) हेय, ज्ञेय एवं उपादेय (३) चार काल :- सादि-सान्त, अनादि-अनन्त, सादि-अनन्त एवं अनादि-सान्त (४) पाँच भाव :- उपशम,

क्षय, क्षयोपशम, औदयिक एवं पारिणामिक, (५) सात तत्त्व :- जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा मोक्ष।

अब प्रश्नोत्तरों द्वारा एक-एक को घटित करते हुए बताते हैं :-

(१) सर्वप्रथम संयोग पर उक्त पाँचों बोल घटित करते हैं :-

प्रश्न :- संयोग सुखदायक हैं या दुःखदायक?

उत्तर :- समस्त संयोग परद्रव्य हैं और परद्रव्यों में न सुख हैं; न दुःख हैं; अतः संयोग न सुखदायक है, न दुःखदायक। जिसके पास जो होता है, वही तो दे सकता है। जब संयोगों में सुख-दुःख हैं ही नहीं, तो वे सुख-दुःख देंगे कहाँ से? अतः यह निश्चय हुआ कि संयोग न तो सुखदायक हैं, न दुःखदायक।

प्रश्न :- संयोग हेय है, ज्ञेय है या उपादेय?

उत्तर :- जो दुःखदायक होता है वह हेय होता है, जो सुखदायक होता है उपादेय होता है, जब यह निर्णय पहले प्रश्न में ही हो चुका है कि संयोग सुख व दुःखदायक नहीं है तो यह स्पष्ट ही है कि सभी संयोग मात्र ज्ञेय हैं, हेय-उपादेय नहीं।

प्रश्न :- संयोग सादि-सान्त हैं या अनादि-अनन्त?

उत्तर :- सभी परद्रव्य अनादिकाल से हैं और अनन्तकाल तक रहेंगे, इस दृष्टि से संयोग अनादि अनन्त ही हैं। अतः उन्हें नाश करने या मिटाने का प्रश्न ही नहीं उठता। लोक के द्रव्य तो लोक में ही रहेंगे। हमें उनसे कुछ हानि-लाभ ही नहीं है, तो फिर हमें उनसे क्या लेना-देना है। जिन परद्रव्यों का संयोग जीव से हुआ है, वे सादि-सान्त है, अतः उन्हें निरर्थक जानकर छोड़ा जा सकता है, अतः उन्हें छोड़ देना है। **(क्रमशः)**

41वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आमंत्रण

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा दिनांक 12 से 21 अगस्त तक होने वाले टोडरमल महाविद्यालय के 41वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आमंत्रण दिया गया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, श्री महेन्द्र-राहुलजी गंगवाल जयपुर, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री आदि अनेक महानुभाव मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा आयोजित
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

41वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 12 अगस्त से मंगलवार 21 अगस्त, 2018 तक)

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का **41वाँ शिक्षण शिविर पण्डित टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 12 अगस्त से 21 अगस्त, 2018** तक लगने जा रहा है।

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा। शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

संपर्क सूत्र – पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458

सोश्यल मीडिया द्वारा तत्त्वप्रचार

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी आप हमारे facebook पेज pandit todarmal smarak trust के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.facebook.com/ptst.jaipur

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी एवं सत्साहित्य का ऑनलाईन ऑर्डर देने हेतु visit करें –
www.ptst.in

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों को आप USTREAM के माध्यम से लाईव देख सकते हैं।
www.ustream.tv/channel/ptst

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों का लाभ आप हमारे YouTube चैनल PTST के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.youtube.com/user/todarmalsmaraktrust

जैनधर्म को प्रारम्भ से सीखने अथवा और भी विविध विषयों को डॉ. संजीवकुमार गोधा द्वारा YouTube पर सुनने के लिये निम्न लिंक का प्रयोग करें –
www.youtube.com/c/drsanjeevgodha

प्रसंगवश –

प्रशिक्षण शिविर में सम्मिलित प्रशिक्षणार्थियों को एक आह्वान

''दुर्लभ है संसार में एक जथारथ ज्ञान''

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

वर्तमान काल में संसार बढाने के अवसर अत्यंत सुलभ हैं, स्वयं हम सभी लोग तो दिन-रात अपना संसार बढाने के प्रयत्नों में जी-जान से जुटे ही रहते हैं, अन्य लोग भी इस विषय में एक दूसरे पर आचार्यत्व करते हैं। ऐसे इस काल में संसार को काटने वाला, हमें इस संसार सागर से पार उतारने वाला यथार्थ ज्ञान (आत्मज्ञान, तत्त्वज्ञान) महादुर्लभ वस्तु है। आज यहाँ इस सभागार में बैठे लोग उसी दुर्लभ प्रजाति के वे छंटेछंटाये लोग हैं, जिन्हें इस कलिकाल में भी वीतरागी सर्वज्ञदेव द्वारा प्रणीत भवतापहारी, वीतरागी तत्त्वज्ञान उपलब्ध है।

उनके दुर्भाग्य की महिमा तो हम क्या कहें, जिन्हें यह तत्त्वज्ञान उपलब्ध ही नहीं है या जिन्हें यह उपलब्ध होते हुए भी जो इसकी उपेक्षा करते हैं, इस ओर ध्यान ही नहीं देते हैं। पर ऐसे वे चुनिन्दा सौभाग्यशाली लोग भी, जो स्वयं यह दुर्लभ मार्ग पा गये हैं, अपने आत्मीय प्रियजनों को भी इस मार्ग पर लाने में सक्षम नहीं हो पाते हैं, फलस्वरूप उनकी ओर से स्वयं भी कदम-कदम पर प्रतिरोध का सामना करते हैं, अपनी शक्ति का अपव्यय करते हैं और वांछित प्रतिफल पाने में निष्फल रहते हैं।

मात्र कुछ ही चुनिन्दा परम सौभाग्यशाली लोग ऐसे होते हैं जो इस मोक्षमार्ग के नेता बनते हैं, स्वयं इस मार्ग पर चलते हैं और अपने साथ अपने परिजनों, साधर्मियों और निकटभव्य जीवों को इस मार्ग पर लाने में निमित्त बनते हैं।

क्या आप सभी को यह अहसास है कि अपने इस वर्तमान जीवन में और विगत 18 दिनों में इस वीतरागी ज्ञानगंगा में सराबोर होकर स्नान करने व तीर्थंकरों एवं गणधर देवों द्वारा प्रणीत, कुन्दकुन्दादि आचार्य परम्परा द्वारा प्रतिपादित इस भवतापहारी वीतराग विज्ञान को घर-घर तक पहुंचाने और जन-जन की वस्तु बनाने की कला का प्रशिक्षण पाकर आप भी मोक्षमार्ग के नेता बनने की दिशा में एक कदम आगे बढ गए हैं?

आपने अपने विगत जीवन में अनेकों उपलब्धियां हासिल की होंगी और अपने आगामी जीवन में अन्य अनेकों उपलब्धियाँ हासिल करने के सपने भी संजोये होंगे पर यदि आप आंकलन करेंगे तो पायेंगे कि किसी एक भी पात्र जीव को इस मार्ग पर लाने का कार्य जगत की अन्य किसी भी कथित महानतम उपलब्धि से अनन्तगुना महान है, सर्वोत्कृष्ट है। यदि ऐसा कार्य हम कर पाये तो क्या हम उन जगत उद्धारक तीर्थंकर भगवंतों की महान परम्परा में उनके शिशु बनकर शामिल नहीं हो गये हैं?

यद्यपि हम सभी लोग मुक्तिमार्ग के पथिक हैं, हम बंध के अभिलाषी नहीं और हमें किसी भी कोटि का कोई भी बंध अभीष्ट नहीं है तथापि क्या आप नहीं जानते हैं कि तीर्थंकर प्रकृति के बंध का कारण क्या है?

''जगत के समस्त प्राणियों के कल्याण की भावना''

उक्त ऐसी ही भावना के वशीभूत इस मार्ग में जुड़ने और जुटने पर छोटे पैमाने पर ही सही, पर क्या आप भी उसी जाति के बंध के भागी नहीं बन गये हैं?

यह सच है कि जब भी हीरे की चर्चा चलती है तो प्रत्येक जनसामान्य के मनोमस्तिष्क में कोहीनूर का नाम कोंध जाता है; पर क्या एक महीन से महीन हीरे का कण भी उसी महान ''हीरा प्रजाति'' का प्रतिनिधित्व नहीं करता है? ठीक इसी प्रकार यह सच है कि मोक्षमार्ग के नेता तो वीतरागी सर्वज्ञदेव ही हैं; पर उन्हीं के संदेशवाहक हम सभी लोग भी उन्हीं की परम्परा के लघुतम प्रतिनिधि नहीं हैं?

उक्त चर्चा का आशय किसी भी प्रकार से स्वयं अपने आप को महिमामंडित करना कतई नहीं है, इसका उद्देश्य तो मात्र अपने इन प्रयासों की उपयोगिता और तद्जनित महान उपलब्धियों की ओर सभी का ध्यान आकर्षित करना है, सभी को इस महान अभियान में शामिल होकर तन-मन-धन से योगदान करने के लिये प्रेरित करना है।

आज हम इस मार्ग पर हैं तो इसलिये कि एक दिन कोई हमारी अंगुली पकड़कर हमें इस मार्ग पर लाया था। क्या हम उसके इस उपकार को भूल जायेंगे, क्या आज हमारे पास उसके उक्त उपकार का प्रतिदान करने का अवसर नहीं है, तो आज हम भी उसी प्रकार किसी को इस मार्ग पर लाकर उसके कल्याण का निमित्त नहीं बनेंगे?

अनादि से उक्त परम्परा अक्षुण्णरूप से चली आई है और आज इसीलिये हम भी इस मार्ग पर हैं, क्या अब हम इस परम्परा को यहीं नष्ट हो जाने देंगे, क्या हम इसे आगे नहीं बढाएंगे?

हम सभी लोग इस परम्परा से लाभान्वित हैं तो क्या हम अपने परिजनों और साधर्मियों को भी इससे लाभान्वित होने का अवसर प्रदान नहीं करेंगे?

यदि हम यह अवसर चूक गये, यदि हमने इस कार्य को आगे नहीं बढाया तो क्या पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की भाषा में हम उन कौओं से भी गये बीते नहीं कहलायेंगे जो कहीं भी भोजन पाकर पहले कांव-कांव करके अपने परिजनों को एकत्र करते हैं और तब उनके साथ सम्मिलित होकर उक्त भोजन का आस्वादन करते हैं।

सिर्फ मार्ग पा जाना ही पर्याप्त नहीं, उस पर बने रहना, आगे बढते रहना भी महत्वपूर्ण है, वरना अटकने और भटकने के अवसर अनेक हैं। वर्तमान में हम जिस भूमिका के प्राणी हैं, उनके लिये यह संभव नहीं है कि एकाकी रहकर भी अपनी आत्मसाधना में लगे रहें और आगे बढ सकें। हमें सहचर साथी चाहिये, सहयोगी चाहिये। हमें अपने समान रुचि, विचारधारा और लक्ष्यों वाले सदस्यों का एक भरापूरा समाज चाहिये जो हमें पथभ्रष्ट न होने दे, प्रमादी न होने दे। जो हमें जागृत रखे, जो हमें प्रेरित करे, जो निरंतर हमारा स्थितिकरण करे। अपने लिये एक ऐसे सक्षम समाज की रचना करने का दायित्व भी स्वयं हमारे ही कंधों पर है। यदि हम ऐसा न कर सके तो कोई आश्चर्य नहीं कि हम एक बार फिर भटककर इस अनंत संसार में कहीं खो जाएं। हमारे साथ अनेकों बार ऐसा हो भी चुका है। हमने अनेकों बार साक्षात् स्वयं तीर्थंकरों से दिव्यदेशना का श्रवण किया, हम मार्ग पर आये पर टिक न सके, पुनः भटक गये। इसीलिये हम अब तक संसार में ही बने हुए हैं। अब हम एक बार फिर अपनी उक्त गलती को दोहराने का खतरा मोल नहीं ले सकते हैं। उक्त तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में मैं आज आपका आह्वान करता हूँ कि आइये हम सभी मिलकर एक ऐसे आत्मार्थी समाज का निर्माण करें जो स्वयं आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो, अन्य लोगों को इस मार्ग पर लायें और जो लोग इस मार्ग पर बने हुए हैं, उन्हें इससे च्युत न होने दें। इसी में हम सबका कल्याण निहित है। यही वह उपकार है जो जगत के समस्त जीवों के प्रति तीर्थंकर और गणधरदेव भी करते हैं। ●

शोक समाचार

कोलत्तूर-चैन्नई निवासी श्री दीपक आर. का दिनांक 22 मई को दुर्घटनावश देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के कनिष्ठ उपाध्याय के छात्र थे। दिनांक 22 मई को आयोजित श्रद्धांजलि सभा के अन्तर्गत डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल एवं ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना ने अपना उद्‌बोधन दिया। साथ ही सभी उपस्थित महानुभावों ने शोक संतप्त परिवार को इस विपरीत परिस्थिति में धैर्यधारण करने की भावना व्यक्त की।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

7 जून से 9 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
12 से 21 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
6 से 13 सितम्बर	अध्यात्म स्टडी सर्किल	
	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
14 से 25 सितम्बर	बेलगांव (कर्ना.)	दशलक्षण महापर्व
5 से 12 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर

मुक्त विद्यापीठ के छात्रों हेतु सूचना

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) के **प्रथम सेमेस्टर की परीक्षायें जून 2018 के अंतिम सप्ताह में होने जा रही है।** परीक्षा के एक सप्ताह पूर्व (लगभग 25 जून तक) सभी परीक्षार्थियों को एनरोलमेंट नम्बर व प्रश्नपत्र भेज दिए जावेंगे। जिन परीक्षार्थियों ने अभी भी परीक्षा की तैयारी शुरु नहीं की है, वे शीघ्र तैयारी में जुट जावें। परीक्षा कार्यक्रम निम्नानुसार है -

परीक्षा कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा (प्रथम सेमेस्टर)

प्रथम वर्ष (उपाध्याय कनिष्ठ)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग-1
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : छहढाला (70 अंक) + सत्य की खोज (30 अंक)

द्वितीय वर्ष (उपाध्याय वरिष्ठ)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा (प्रथम सेमेस्टर)

प्रथम वर्ष -

1. प्रथम प्रश्नपत्र : गुणस्थान विवेचन
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : क्रमबद्धपर्याय (70 अंक) + सामान्य श्रावकाचार (30 अंक)

द्वितीय वर्ष -

1. प्रथम प्रश्नपत्र : समयसार-पूर्वरंग और जीवाजीवाधिकार
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : गोम्मटसार कर्मकाण्ड -प्रथम अध्याय

तृतीय वर्ष -

1. प्रथम प्रश्नपत्र : समयसार-कर्ताकर्माधिकार
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : गोम्मटसार जीवकाण्ड - गाथा 70 से 215 तक (97 से 112 गाथा छोड़कर)

ध्यान रहे - परीक्षा बोर्ड कार्यालय से जानकारी चाहने हेतु परीक्षार्थी अपना एनरोलमेंट नम्बर, नाम, स्थान एवं विषय का उल्लेख अवश्य करें; ताकि आपके द्वारा चाही गई जानकारी शीघ्र मिल सके। **- प्रबंधक**

टोडरमल महाविद्यालय में -

उपाध्याय वरिष्ठ का परीक्षा परिणाम

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के उपाध्याय वरिष्ठ(सत्र 2017-18) का कॉलेज परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। इसमें प्रथम स्थान **संयम जैन** पुत्र श्री प्रिंस जैन, दिल्ली (85.2%), द्वितीय स्थान **संभव जैन** पुत्र श्री मनोज जैन, दिल्ली (84.4%) एवं तृतीय स्थान **वैभव जैन** पुत्र श्री अजितकुमार जैन, आरोन (83.6%) ने प्राप्त किया। ज्ञातव्य है कि कुल 53 छात्रों ने परीक्षा दी, **13 छात्र 80% से अधिक, 19 छात्र 70% से अधिक एवं 11 छात्र 60% से अधिक** - इसप्रकार 43 छात्र प्रथम श्रेणी एवं 10 छात्र द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये।

सभी विद्यार्थियों को टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

(पृष्ठ 1 का शेष...)

क्रमबद्धपर्याय व नयचक्र पर गोष्ठी, सिद्धायतन के छात्रों द्वारा गुरुदत्त केवली की जीवनगाथा व शाहगढ पाठशाला के बच्चों द्वारा वज्रदत्त चक्रवर्ती का वैराग्य नामक नाटक आदि अनेक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

दोपहर की व्याख्यानमाला में – डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित रतनचंदजी कोटा, पण्डित शिखरचंदजी शास्त्री सागर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित निखलेशजी दलपतपुर, पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, डॉ. नेमचंदजी खतौली, पण्डित अजितजी अलवर, पण्डित निलयजी आगरा, पण्डित मनीषजी कहान जयपुर, पण्डित अशोकजी इन्दौर, पण्डित गणतंत्रजी आगरा, पण्डित जिनकुमारजी जयपुर, पण्डित शुभमजी सिद्धायतन, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया आदि विद्वानों के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

प्रशिक्षण कक्षायें – बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने ली।

प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा ली गई।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा एवं पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई के निर्देशन में सर्वश्री पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, राजेशजी जयपुर, संजयजी सेठी जयपुर, राकेशजी टीकमगढ, निलयजी आगरा, मनीषजी कहान जयपुर, अशोकजी इन्दौर, विनीतजी हटा, गणतंत्रजी आगरा, संतोषजी बकस्वाहा, संयमजी नागपुर, जिनेशजी मुम्बई, सचिनजी सागर, जिनकुमारजी जयपुर, रूपेन्द्रजी जयपुर, अच्युतकांतजी जयपुर, गौरवजी जयपुर, सतेन्द्रजी बरायठा, अविनाशजी कोलारस, प्रदीपजी पथरिया, सचिनजी कोटा, निलयजी कोटा, श्रीमती लताजी देवलाली, श्रीमती आशाजी जयपुर, श्रीमती स्तुतिजी जयपुर, विदुषी प्रतीति पाटील, श्रीमती मोनाजी भारिल्ल जयपुर, श्रीमती प्रेक्षाजी जैन बांसवाड़ा, विदुषी नैना जैन भोपाल आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रात:कालीन प्रौढकक्षायें – प्रात: 5.45 से 6.30 तक प्रौढ कक्षायें डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम आदि विद्वानों द्वारा ली गई।

प्रौढ़ कक्षायें – मुख्य प्रवचन के पश्चात् प्रात: प्रवचनसार (चरणानुयोगसूचक चूलिका) की कक्षा ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा और मोक्षमार्गप्रकाशक की कक्षा डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर व पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर द्वारा तथा दोपहर में नयचक्र की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली और मोक्षशास्त्र की कक्षा डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ द्वारा ली गई। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पूर्व गुणस्थान विवेचन की कक्षा पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा ली गई।

बालवर्ग हेतु प्रतिदिन अनेक कक्षाओं का आयोजन हुआ, जिसका संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई के निर्देशन में प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों द्वारा किया गया, जिसमें सैंकड़ों बच्चे सम्मिलित हुये।

इसप्रकार 52वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक सानन्द संपन्न हुआ।

(उद्घाटन समारोह के समाचार पूर्व अंक (जून–प्रथम) में प्रकाशित किये जा चुके हैं।)

संकल्प दिवस के रूप में मनाया डॉ. भारिल्ल का जन्मदिन

सिद्धायतन–द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ चल रहे प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 25 मई को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का जन्मदिन संकल्प दिवस के रूप में मनाया गया।

इस अवसर पर पूरे देश में फैले उनके हजारों शिष्यों में से बड़ी संख्या में शास्त्री विद्वान उपस्थित हुए व सभी ने आजीवन इस वीतरागी तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने की शपथ ली।

कार्यक्रम में डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, श्री अशोकजी जैन जबलपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, श्री सुरेशचंदजी जैन शिवपुरी, श्री प्रद्युम्नजी फौजदार, श्री मुन्नालालजी जैन, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी टीकमगढ, श्री महेन्द्रजी गंगवाल जयपुर, श्री राहुलजी गंगवाल जयपुर, श्री चन्द्रभानजी जैन, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल जयपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, श्रीमती कुसुमजी गंगवाल आदि अनेक महानुभाव मंचासीन थे।

इस अवसर पर श्री महेन्द्र-राहुलजी गंगवाल जयपुर द्वारा तिलक एवं माल्यार्पण तथा श्री प्रेमचंदजी, रतनचंदजी एवं धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा साफा पहनाकर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का सम्मान किया गया। सिद्धायतन के सभी ट्रस्टियों द्वारा शॉल व श्रीफल भेंटकर भारिल्लजी का सम्मान किया गया। इसके अतिरिक्त अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने सभी स्नातकों को आजीवन तत्त्वप्रचार का संकल्प दिलाया।

सभा को संबोधित करते हुए डॉ. भारिल्ल ने कहा कि जन्मदिन तो उनके मनाये जाते हैं, जिन्होंने इस जन्म मरण का नाश कर दिया है; ये तो संकल्प का दिन है। हमने भी आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के देहावसान पर यह संकल्प लिया था – ''जब तक यह देह रहेगी तब तक जिनशासन के इस तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुंचायेंगे और आज भी संकल्पित हैं। यही कार्य मेरे 1000 शिष्य कर रहे हैं, जिससे पंचम काल के अन्त तक जिनशासन की यह पवित्र ध्वजा लहराती रहेगी।''

सभा का संचालन डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

नवनिर्मित श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय भवन का हुआ लोकार्पण

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के संकल्प दिवस के अवसर पर ही प्रात:काल तीर्थधाम सिद्धायतन के नवनिर्मित श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय भवन का लोकार्पण डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि सभी विद्वानों और शिविरार्थियों की उपस्थिति में मुमुक्षु समाज के भामाशाह श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा द्वारा नाम पट्टिका के अनावरण के साथ किया गया।

इस अवसर पर उन्होंने सिद्धायतन-द्रोणगिरि में चल रही तत्त्वज्ञान की गतिविधियों की भरपूर प्रशंसा करते हुए उसके संचालन में भरपूर सहयोग प्रदान करने की घोषणा की।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 5 जून को रात्रि में श्री महेन्द्रजी गंगवाल जयपुर की अध्यक्षता में प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न हुआ। श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा आदि महानुभावों के साथ सभी प्रशिक्षक अध्यापकगण भी मंच पर उपस्थित थे।

अनेक प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचार रखे। सभी ने प्रशिक्षण विधि की प्रशंसा करते हुये अपने नगर में पाठशाला संचालन का संकल्प व्यक्त किया।

अन्त में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने संतोष व्यक्त करते हुए प्रशिक्षणार्थियों को कहा कि अभी जिन साधर्मियों ने आत्मविश्वासपूर्वक अपने भाव व्यक्त किये हैं, वैसे ही कार्य करें। हम सभी मिलकर एक ऐसे आत्मार्थी समाज का निर्माण करें जो स्वयं आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो, अन्य लोगों को इस मार्ग पर लायें और जो लोग इस मार्ग पर बने हुए हैं, उन्हें इससे च्युत न होने दें। इसी में हम सबका कल्याण निहित है। यही वह उपकार है जो जगत के समस्त जीवों के प्रति तीर्थंकर और गणधरदेव भी करते हैं।

कार्यक्रम का मंगलाचरण आगम जैन ने एवं संचालन पण्डित निखलेशजी दलपतपुर एवं संयम जैन पुजारी ने किया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

कार्यक्रम में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, श्री चन्द्रभानजी जैन (अध्यक्ष-सिद्धायतन-द्रोणगिरी), श्री मुन्नालालजी जैन शाहगढ (मंत्री-सिद्धायतन-द्रोणगिरी), श्री विनोदजी डेवडिया शाहगढ, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, श्री निखलेशजी दलपतपुर, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, श्री लक्ष्मीचंदजी जयपुर, श्री महेन्द्रजी गोधा जयपुर, श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल जयपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे।

सभा का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने किया।

दीक्षांत व समापन समारोह संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 6 जून को प्रात: श्री जिनेन्द्र अभिषेक, नित्यनियम पूजन एवं गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् शिविर का दीक्षांत एवं समापन समारोह श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल जयपुर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि सर्वश्री अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, कमलचंदजी पिड़ावा, अजितजी अलवर, राजकुमारजी उदयपुर, धर्मेन्द्रजी कोटा, पीयूषजी जयपुर, निलयजी आगरा, मनीषजी कहान जयपुर, गणतंत्रजी आगरा, अच्युतकांतजी जयपुर एवं समस्त अध्यापकगण, विद्यालयों के अधीक्षकगण तथा विशिष्ट अतिथि अध्यक्ष श्री चन्द्रभानजी, मंत्री मुन्नालालजी एवं ट्रस्ट के सभी पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

प्रशिक्षण शिविर की रिपोर्ट पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने दी। पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। श्री चन्द्रभानजी एवं पण्डित राजकुमारजी उदयपुर ने उक्त शिविर में सहयोगी बने समस्त विद्वानों, शिविरार्थियों, कार्यकर्ताओं तथा आयोजन समिति का आभार व्यक्त किया।

डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने दीक्षांत भाषण में कहा कि यह दीक्षा का अंत है, शिक्षा का अंत नहीं; अत: आप सभी को पूरे जीवनभर स्वयं तत्त्वज्ञान को सीखना है, यथासंभव प्रचार-प्रसार भी करना है। इसके पश्चात् सभी अध्यापकों को स्मृति-चिह्न प्रदान किये गये।

पण्डित कमलंचदजी ने परीक्षा परिणामों की घोषणा इसप्रकार की-

बालबोध प्रशिक्षण (हिन्दी) में 161 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। इनमें से 134 छात्र प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए, जिसमें 86 छात्र 75% से अधिक अंकों से उत्तीर्ण हुये; 19 द्वितीय श्रेणी, 6 तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये एवं 2 विद्यार्थी अनुत्तीर्ण रहे।

बालबोध प्रशिक्षण (हिन्दी) में **प्रथम स्थान** श्रीमती प्रियंका जैन धर्मपत्नी श्री स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर व श्रीमती राजुल जैन धर्मपत्नी श्री संतोषजी शास्त्री बकस्वाहा ने एवं **द्वितीय स्थान** श्रीमती आकांक्षा जैन धर्मपत्नी श्री ऋषभकुमारजी जैन बड़ामलहरा व श्रीमती स्वाति पाटनी धर्मपत्नी श्री राहुलजी पाटनी इन्दौर ने प्राप्त किया।

बालबोध प्रशिक्षण (अंग्रेजी) में 9 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। सभी 9 विद्यार्थियों ने विशेष योग्यता प्राप्त की। **प्रथम स्थान** प्रणव जैन पुत्र श्री विवेकजी जैन मंगलायतन एवं **द्वितीय स्थान** अक्षय जैन पुत्र श्री दिनेशजी जैन टीकमगढ व मुक्ति संचेती-सचिन संचेती मंगलायतन ने प्राप्त किया।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में 84 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। इनमें से 74 छात्र प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए, जिसमें 34 छात्र 75% से अधिक अंकों से उत्तीर्ण हुये; 10 द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। प्रवेशिका प्रशिक्षण में **प्रथम स्थान** रश्मि जैन-अरविन्द जैन ग्वालियर ने, **द्वितीय स्थान** संयम जैन पुजारी पुत्र श्री कमलेशजी जैन पुजारी खनियांधाना ने और **तृतीय स्थान** अनिमेष भारिल्ल पुत्र श्री चेतनप्रकाशजी भारिल्ल राघौगढ ने प्राप्त किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण दिव्यांश जैन अलवर ने एवं संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया।

समंतभद्र शिक्षण संस्थान का –

अधिवेशन एवं सम्मान समारोह संपन्न

द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर में दिनांक 25 मई को समंतभद्र शिक्षण संस्थान का अधिवेशन एवं सम्मान समारोह संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री श्रेणिकजी मलैया सागर (मंत्री-ट्रस्ट कमेटी द्रोणगिरि) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अजितजी जैन बड़ौदा एवं विशिष्ट अतिथियों में श्री कुलदीपजी जैन (न्यायाधीश), श्री राजीवजी समाधिया (एस.डी.एम.), श्री प्रमोदकुमारजी सारस्वत (एस.डी.ओ.पी.), श्री भागचंदजी जैन बड़ामलहरा (मंत्री-प्रबंधकारिणी), श्री अगमजी जैन (आई.पी.एस.), श्री प्रमोदजी जैन सागर, श्री मलूकचंदजी विदिशा, श्री नरेन्द्रजी कोठादार खनियांधाना, श्री चंद्रभानजी जैन, श्री प्रेमचंदजी मस्तांई आदि महानुभाव उपस्थित थे। विद्वत्जनों में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र.सुमतप्रकाशजी, श्री सुरेशचंदजी जैन आदि सभी विद्वत्जन उपस्थित थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण वीतराग-विज्ञान पाठशाला घुवारा के छात्रों ने किया एवं संस्थान का परिचय व प्रगति रिपोर्ट श्री प्रद्युम्नजी फौजदार ने प्रस्तुत की।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में संलग्न सभी संस्थाओं को आशीर्वचन प्रदान किया।

पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि हम सभी आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर हों एवं अन्य जीवों को भी आत्मकल्याण के मार्ग पर लगायें; यही वह उपकार है जो जगत के समस्त जीवों के प्रति तीर्थंकर और गणधरदेव भी करते हैं। साथ ही श्री अजितजी जैन बड़ौदा ने भी अपना उद्बोधन दिया।

समंतभद्र शिक्षण संस्थान के अधिवेशन के दौरान ही तीर्थधाम सिद्धायतन की संकल्पना/स्थापना और उसके विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के लिये ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष श्री चन्द्रभानजी जैन एवं मंत्री श्री प्रेमचंदजी मस्ताई का शॉल/साफा/श्रीफल और प्रशस्तिपत्र भेंटकर अभिनन्दन किया गया।

कार्यक्रम में योगसार अनुशीलन का विमोचन मंचासीन अतिथियों के करकमलों द्वारा हुआ।

सम्मान समारोह के अन्तर्गत शिक्षण संस्थान के प्राचार्य श्री देवकीनंदन गुप्ता का दसवीं कक्षा के अच्छे परीक्षा परिणाम हेतु एवं वरिष्ठ ट्रस्टी श्री बाबूलाल जैन शाहगढ द्वारा लगभग 1 एकड़ जमीन ट्रस्ट को प्रदान करने के उपलक्ष्य में सम्मान किया गया। इसके अतिरिक्त इस वर्ष दसवीं में उत्तीर्ण छात्रों को प्रोत्साहन राशि देकर सम्मान किया गया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

टोडरमल स्नातक परिषद् का अधिवेशन संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ चल रहे प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनाँक 26 मई को पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन की अध्यक्षता डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने की। विद्वत्वर्ग में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित शिखरचंदजी सागर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, डॉ. मनीषजी शास्त्री रहली, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा आदि विद्वत्गण मंचासीन थे। मुख्य अतिथि श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि श्री मुन्नालालजी, श्री विनोद्कुमारजी द्रोणगिरि थे।

स्नातक परिषद् के कार्यों का परिचय डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने दिया। स्नातक परिषद् के सदस्यों द्वारा प्राप्त उपलब्धियों का विवरण पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर ने दिया।

इस अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ का दीक्षान्त समारोह संपन्न हुआ, जिसमें मुक्त विद्यापीठ का परिचय पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने दिया तथा इस वर्ष शास्त्री उत्तीर्ण हुये छात्रों को डिग्री भेंटकर सम्मानित किया।

तत्पश्चात् ब्र. यशपालजी जैन द्वारा चलाई जा रही कंठपाठ योजना के अन्तर्गत टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थी **नयन जैन बरायठा** ने संपूर्ण समयसार परमागम (प्राकृत गाथाएं) को कंठस्थ कर मंच पर सभी के समक्ष सुनाया। उपस्थित सभी महानुभावों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

मंगलाचरण कु.प्रतीति पाटील जयपुर ने एवं संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया।

प्रकाशन तिथि : 13 जून 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com